सुभद्र झा

सुभद्र झाक जन्म 9 जुलाई 1909 ई० कऽ मधुबनी जिलाक नागदह गाममे भेल छलनि। हिनक पिता ज्योतिर्विद कु जी झा छलाह आ माता निर ना देवी छलीह।

सुभद्र झाक अध्ययनारम्भ गामेक गुरु पं० बलदेव झा करौलथिन। हिनक बाल्यावस्थाक दोसर गुरु छलाह छेदी लाल। हिनक पिता पं० कु जी झा जखन गाम आबथि तखन हिनका अपने लग खाट पर सुताओल करथि तथा भोरे-भोर हिनका संस्कृतक श्लोक सभ रटाबथि। संस्कृतक अमरकोशक किछु पर्व, प्राय: आदि पर्व, एहिना ओछाओने पर हिनका कंठस्थ भऽ गेलनि।

गामक पाठशालाक बाद सुभद्र झा मिडिल स्कूल रहिकासँ मिडिल पास कयलनि। 1923 ई० मे ओ वाटसन स्कूल, मधुबनीमे नाम लिखओलनि आ ओतहिसँ मैट्रिक परीक्षा पास कयलनि। मैट्रिक पास कऽ विज्ञान पढ़बाक लेल गामसँ ओ कलकत्ताक लेल प्रस्थान कयलनि। मुदा गामेक हिनकासँ जेठ एक विद्यार्थी अपना संग मुजफ्फरपुर पढ़बा लेल ई कहि लऽ गेलथिन जे ओतहि विज्ञानमे नामांकन करा देथिन। ओ हिनक अनभिज्ञताक लाभ उठा हिनक नाम कला संकायमे लिखा देलथिन आ चिकित्सक बनबाक अभिलाषा सर्वदाक लेल समा भऽ गेलनि। ओ जी० बी० बी० कॉलेज, मुजफ्फरपुरसँ 1930 ई० मे आइ० ए० परीक्षोतीर्ण भेलाह। उच्च शिक्षाक हेतु ओ कलकत्ता चल गेलाह। ओतय ओ स्कौटिश चर्च कॉलेजसँ बी० ए० तथा कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत) कयलनि। 1935 ई० मे ओ कलकत्ता विश्वविद्यालय छोड़लनि। डॉ० ए० बनर्जी शास्त्रीक निर्देशनमे पटना विश्वविद्यालयसँ चारि वर्ष लेल (1936-40) मैथिली विषयक शोध करबाक हेतु हिनका रिसर्च स्कॉलरशिप भेटलनि। परन्तु मुस्किलसँ आठ अध्याय समा भेल छलनि कि फेलोशिपक अवधि समा भऽ गेलैक। तखन अपन पूर्व गुरु विश्वविख्यात भाषाविद् डॉ०

सुनीति कुमार चटर्जीक निर्देशनमे ने केवल शोध काज पूरा करबाक पूर्ण अवसर भेटलनि, पूर्ण पाण्डुलिपिक पुनरीक्षण सेहो भऽ गेलनि। 1944 ई० मे डॉ० सुभद्र झा पटना विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट उपाधिसँ सम्मानित कयल गेलाह। संयोगवश 1946 ई० मे भाषा विज्ञानक अध्ययन करबाक हेतु पटना विश्वविद्यालयसँ दू वर्ष फ्रान्समे रहि पढ़बाक व्यवस्था भऽ गेलनि। पेरिसमे ओ भाषा विज्ञान ओ ध्वनि विज्ञानक गहन अध्ययन कयलनि। पेरिस विश्वविद्यालयसँ 'ओ डाक्टर-एस-लएतर्स' उपाधि प्रा   कयलनि। हिनक डाक्टरेटक परीक्षाक रिचार्टर छलाह श्रीज्यूल ब्लओक। अन्य दू परीक्षक छलाह भारतीय दर्शनक प्राचार्य श्रीमस्सओ उर्सएल एवं श्रीपऑँस। एकर अतिरिक्त ओ साहित्याचार्य आ बी० एल० क उपाधि सेहो प्रा   कयने छलाह।

अपन जीविकाक आरम्भ सुभद्र झा कलकत्ताक एकटा मुनिस्पैलिटीक प्राइमरी स्कूलमे गुरुजीक रूपमे कयलनि। 1935 ई० मे जिला स्कूलक हेड पण्डित भेलाह। 1941 ई० मे चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज दरभंगामे हिन्दीक प्राध्यापक नियुक्त भेलाह। तकरा बाद पटना कॉलेज, पटनामे प्राध्यापक नियुक्त भेलाह। 9 जनवरी 1951 कऽ डॉ० सुभद्र झा राजकीय संस्कृत कॉलेज वाराणसीक सरस्वती भवन पुस्तकालयमे लाइब्रेरियनक पद पर नियुक्त कयल गेलाह। 1956 ई० मे जखन उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापनाक निर्णय भेल, तँ राजकीय संस्कृत कॉलेजक सरस्वती भवन पुस्तकालय सहित अधिग्रहण कऽ लेल गेल। डॉ० सुभद्रझाक नियुक्ति वाराणसेय-संस्कृत विश्वविद्यालयमे ग्रन्थाध्यक्षक पद पर 22 जुलाई 1958 सँ कयल गेल जतय ओ 15 अपैल 1967 धरि रहलाह। पुन: 1970 ई० सँ 1976 ई० धरि योगदा सत्संग कॉलेज, राँचीक प्रधानाचार्यक पद पर आसीन भेलाह। सबसँ अन्तमे डॉ० सुभद्र झा पटना विश्वविद्यालयक 'मिथिलेश रमेश्वर सिंह मैथिली चेयर' क रिसर्च प्रोफेसरक पदकेँ सुशोभित कयलनि।

डॉ० सुभद्र झा प्रख्यात भाषाविद् छलाह। ओ हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, इटैलियन सहित चौदह भाषाक जानकारे टा नहि छलाह,

उक्त भाषा पर आधिपत्य छलनि। उक्त भाषामे हिनक कतेको मौलिक, अनूदित ओ सम्पादित ग्रंथ प्रकाशित -अप्रकाशित छनि। हिनक पाण्डित्यक परिचय भेटैत अछि 'दि फॉरमेशन ऑफ दि मैथिली लैग्वेज' मे जे हिनका भाषाशास्त्रीक रूपमे विश्वस्तर पर प्रसिद्धि दिओलकनि। ई पोथी मैथिलीक भाषा-तात्विक अध्ययनक दृष्टिसँ एकमात्र पोथी अछि जे मैथिलीकेँ स्वतन्त्र भाषाक रूपमे निर्विवाद रूपसँ प्रतिस्थापित करैत अछि। हिनक दोसर प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि 'स्टडीज इन दि पिप्पलाद संहिता ऑफ अथर्ववेद'। अंग्रेजीमे लिखल विद्यापति विषयक हिनक प्रमुख पोथी अछि। 'सांग्स ऑफ विद्यापति'। एहि पोथीमे विद्यापतिक गीतक अंग्रेजीमे अनुवाद अछि। संगहि वृहत भूमिकामे हिनक विद्वताक झलकि भेटैत अछि। ई पोथी लिखि डाक्टर साहेब मैथिली साहित्यक संग-संग विद्यापति विषयक अध्ययनकेँ विश्वविख्यात बना देलनि। पहिल संस्करण इंगलैंडमे छपल। भारतमे एकर संस्करण बादमे भेल। डॉ० सुभद्र झाक यूरोपीय भाषासँ अनूदित अन्य पोथी अछि- पिशेल कृत प्राकृत भाषाक व्याकरणक जर्मनसँ संस्कृतमे अनुवाद आ विंटरनीत्सक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिस्ट्री ऑफ इंडियन क्लासिकल लिटरेचरक' तीन खण्ड तथा वसुबन्धुक अभिधर्मकोशक फ्रेंच एवं संस्कृतसँ अंग्रेजीमे अनूदित। हिनका द्वारा कयल गेल एहि अनूदित पोथीकेँ विद्वान लोकनि आदरक संग देखैत छथि। डाक्टर साहेब सम्पादन तथा सह सम्पादनो किछु पोथीक कयने छलाह जाहिमे प्रमुख अछि-बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित 'विद्यापति पदावली।' खण्ड-2 क सम्पादक मण्डलक अध्यक्षओ छलाह। एहिमे विद्यापतिक गीतक पाठालोचन आ पाठ निर्धारण करबामे हिनक पैघ योगदान छनि।

डॉ० सुभद्र झा द्वारा संस्कृतमे सम्पादित पोथी छनि-सर्वदेशवृत्तान्त संग्रह अथवा अकबरनामा धर्मशास्त्रीय-व्यवस्था-संग्रह, विवरण पंजिका, श्रीमदभगवद्गीताया भारती-प्रवेशिका। धर्मशास्त्रीय-व्यवस्था-संग्रहमे कलकत्ता न्यायालय द्वारा समय-समय पर संस्कृत ओ बंगलामे देल गेल जजमेन्ट सभक संकलन-सम्पादन कयल गेल अछि।

मैथिलीमे डॉ० सुभद्र झाक पोथी अछि–प्रवास जीवन, यात्रा–प्रकरण–शतक, नातिक पत्रक उत्तर, विद्यापति–गीत–संग्रह आ मैथिली व्याकरण मीमांसा। एहिमे प्रथम दुनू पोथी यात्रा वृत्तान्त थिक। डॉ० सुभद्र झा जखन उच्च शिक्षा लेल विदेशमे रहथि तँ ओ फ्रांस, इंगलैंड, जर्मनी, इटली आदि देश घुमलाह आ अपन यात्राक वृत्तान्त एवं ओहिठामक लोककजीवनशैलीक अनुभव लिपिबद्ध कऽ 'मिथिला मिहिर' केँ पठायब शुरू कयलनि। ओ 1950 ई० मे 'प्रवास जीवन' नामसँ पुस्तकाकार प्रकाशित भेल। डाक्टर साहेबक 'मैथिली व्याकरण 'मीमांसा' 1983 मे प्रकाशित भेल जे चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज दरभंगामे देल गेल मैथिली भाषाक व्याकरण पर दूटा व्याख्यान थिक। एहिमे मैथिली व्याकरणक स्वतंत्र ओ आदर्श रचना पद्धति पर विचार कयल गेल अछि। पत्रक शैलीमे मैथिलीमे लिखल हिनक 'नातिक पत्रक उत्तर' नामक पोथी प्रकाशित भेल। ई बेसी चर्चित एहि लेल भेल जे एहि पर 1986 ई० मे हिनका साहित्य अकादेमीक पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेल। 'नातिक पत्रक उत्तर' लिखब प्रारम्भ तखन भेल जखन डाक्टर साहेब योगदा सत्संग कॉलेज राँचीमे प्रधानाचार्य छलाह। वास्तवमे एकर प्रारम्भ भेल हिनक ज्येष्ठ दौहित्र शंकरक लिखल एक पत्रसँ। ई पोथी पत्रक माध्यमसँ लिखल विविध–विषयक निबन्धक संग्रह थिक जाहिमे साहित्यिक समालोचना, समसामयिक घटनाक वर्णनक संग–संग धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक विषय पर विवेचन तथा व्यक्तिगत प्रसंगक उल्लेख भेटैत अछि। मैथिली साहित्यक ई अनुपम निधि थिक। एहि पोथीमे डाक्टर साहेबक पाण्डित्य सर्वत्र मुखर अछि। 'जर्नल ऑफ दि युविर्सिटी ऑफ बिहार (नवम्बर 1956 ई०) मे' सन्त कबीर की जन्मभूमि तथा उनके कुछ मैथिली पद' नामक एकटा आलेख छपलनि जाहिमे सन्त कबीरक मैथिलत्व विषयक अवधारणा पर भाषा वैज्ञानिक तक एवं प्रमाण देल गेल जे कबीरक जन्म स्थान आ भाषाक समालोचनाक आधार प्रदान कयलक।

बिहुला–विषहरि सम्बन्धी काव्य ओ कबीरदासक मैथिली पदावली पर शोध–कार्यक उत्कट इच्छा छलनि सुभद्र बाबूकेँ बिहुला–विषहरि पर शोध

करयवला छात्र तँ नहि भेटलनि। हम कबीरदासक मैथिली पदावली पर हुनके निर्देशनमे शोधकार्य कयलहुँ आ आब ओ प्रकाशितो भऽ चुकल अछि।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोगक सहयोगसँ मद्रास विश्वविद्यालयक तत्वावधानमे 27 सँ 29 मई 1972 धरि प्रथम अखिल भारतीय तिरूकुरल सेमिनार आयोजित छल जाहिमे डॉ० सुभद्र झा मैथिली आ संस्कृतक प्रतिनिधि रूपमे आमंत्रित छलाह। हिनक विद्वत्तापूर्णआलेख 'डिडैक्टीक वर्क्स इन मैथिली सिमिलरटू टिरूकरूल "(Didactic works in Maithil similar to Tirukkural)" आ संस्कृत 'डिडैक्टीक वर्क्स इन मैथिली सिमिलरटू दि टिरूकरूल' "(Sanskrit didactic works Similar to The Tirukkural)" विद्वत् समाजमे अपन स्थान पओलक।

डॉ० सुभद्र झाक कृतित्व जतेक महत्वपूर्ण अछि ताहिसँ कनेको कम उल्लेखनीय हुनक व्यक्तित्व नहि छनि। हुनक भेष-भूषा, चालि-ढालि, पहिरब-ओढ़ब, बाजब-बतिआयब-सभटा नितान्त साधारण छलनि। हुनका देखि कऽ हुनक विद्वात्ताक अनुमान करब कठिन छल। ओ एकदम साधारण मैथिल जकाँ रहैत छलाह। हुनका देश विदेश घूमल छलनि तकर दम्भ नहि छलनि। ओ सदिखन ठेठ मैथिली, गाम-घरक मैथिली, बजैत छलाह। गप्पक बीचमे हिन्दी-अंग्रेजी-संस्कृत बाजब अथवा विदेश प्रवासक उल्लेख करब-ई सभ हल्लुकपन हुनका नहि छलनि। अपन प्रभाव जमेबाक कोनो प्रयास ओ कहियो नहि कयलनि।

डॉ० सुभद्र झामे प्रबल इच्छा-शक्ति छलनि। अध्यवसाय आ अध्ययनक बल पर ओ प्राइमरी स्कूलक गुरुजीसँ कॉलेजक प्रधानाचार्य भेलाह। नागदह पाठशालासँ चलि पेरिसक सर्वोच्च शिक्षाक उपाधि प्रा कयलनि। नातिक पत्रक उत्तरमे लिखनहु छथि-''हमरो सन व्यक्ति जकरा मैट्रिक परीक्षामे तथाकथित मातृभाषा हिन्दीमे दस प्रतिशत अंक प्रा भेल; से ने केवल हिन्दीक उच्चतम कक्षाक अध्यापक तथा परीक्षक होयबाक अवसर प्रा कऽ साधन कऽ अपन

जीविकाटा नहि चलाओल, प्रत्युत समाजमे पढ़ल-लिखल व्यक्तिमे परिगणित भेल।''

डाक्टर साहेब (गाममे लोक एही नामसँ सम्बोधित करनि) वस्तुतः ज्ञान पिपासु छलाह। ज्ञानार्जनक ललक रहनि। अध्ययन हिनक व्यसन छलनि। कोनो वस्तुक आ विषयक सूक्ष्मतम ज्ञान प्रा करबाक हिनकामे अद्‌भुत उत्साह रहनि। कलम हिनक पैनी छल। पढ़बा-लिखबा काजमे कनेको आलस्य नहि। हुनक अक्खड़ आ निर्भीक स्वभाव हुनक दृढ़ता एवं संकल्प-निष्ठाकं बाह्‌य अभिव्यक्ति छल। हुनकामे द्वैध नहि छल। जे सोचैत छलाह से बजैत छलाह आ जे बजैत छलाह से करैत छलाह। भीतर-बाहर एकदम स्वच्छ, निर्मल।

डॉ० सुभद्र झा विद्धाने नहि, खेतिहर सेहो छलाह। जो जमि कऽ खेती करैत छलाह। सत्य तँ ई अछि जे ओ अपन परोपट्टाक उदाहरणीय प्रगतिशील किसान रहथि। नवीनतम प्रभेदक बीआ जतऽ भेटनि ततऽ सँ आनि कृषि-कार्य करथि। सीसो, आम, सागवान, बाँस आदि आधुनिक ढंगसँ लगाबथि। नवीनतम कृषि तकनीक जनबाक आ तकर उपयोग करबाक लेल ओ सदति सचेष्ट रहथि।

मानसिक श्रमसँ कनेको कम महत्व ओ शारीरिक श्रमकेँ नहि देलनि। कोनो काज अपने हाथे करबामे हुनका खुशी होइन। पैरे चलबामे ओ नामी रहथि। सात्विक भोजन आ शारीरिक कार्य हुनक स्वस्थताक मूल कारण छल। कहबाक चाही जे ओ जीवनक अन्तिम समय धरि स्वस्थ रहलाह। दीर्घायु भेलाह।

सामाजिक कार्यकलापमे रुचि राखब हुनक स्वभाव छलनि। गामक पुल वा सड़क बनय ताहि लेल ओ बी० डी० ओ० आ कलक्टरक कार्यालयमे दौड़ैत रहैत छलाह। जाहि विवाहमे काटर लेल जाइत छल ताहिमे सम्मिलित नहि होइत छलाह।

डॉ० सुभद्र झा वस्तुतः महामानव छलाह। प्रेरणा पुरुष छलाह। हुनक ताप सहबाक शक्ति आजुक लोककेँ नहि छैक। तेँ सभ हिनकासँ फराकेँ रहैत छल। मुदा जे सटैत छल, स्नेह पबैत छल सैह जनैत छल जे नारिकेरक खोपलैया ओकर

परिचय नहि होइत छैक। सुस्वादु पानि आ कोमल नारिकेर पयबाक लेल कठोर आवरणसँ साक्षात्कार आवश्यक अछि।

डॉ० सुभद्र झाक निधन 13 मई 2000 कऽ काशीमे भऽ गेलनि। आब ओ हमरा सभक बीच नहि छथि। मैथिली भाषा आ साहित्यकेँ अपूरणीय क्षति भेल। हुनक व्यक्तित्व आ कृतित्व चिरस्मरणीय रहत आ ओ प्रेरणाक स्रोत बनल रहताह।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) डॉ० सुभद्र झाक जन्म भेल छलनि

(क) 1909 ई०मे (ख) 1901 ई०मे

(ग) 1919 ई०मे (घ) 1911 ई०मे

(ii) पटना विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट् उपाधिसँ सम्मानित कयल गेलाह

(क) 1944 ई०मे (ख) 1941 ई०मे

(ग) 1942 ई०मे (घ) 1940 ई०मे

(iii) डॉ० सुभद्रा झा कोन भाषाक जानकार छलाह

(क) मैथिली (ख) संस्कृत

(ग) फ्रेंच (घ) तीनू भाषाक

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न –

(i) डॉ० सुभद्र झाक शैक्षणिक जीवन पर प्रकाश दिअ।

(ii) हिनक प्रमुख पोथीक संक्षि परिचय लिखू।

(iii) डॉक्टर साहेबक व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एकटा निबन्ध लिखू।

(iv) डॉ० सुभद्र झा कोन-कोन भाषा जनैत छलाह आ कोन-कोन भाषामे रचना कयलनि ?

(v) डॉ० सुभद्र झा भाषाविद् छलाह। विवेचना करू।

(vi) डॉ० सुभद्र झा विद्वान, भाषावैज्ञानिक, साहित्यकार, खेतिहर आ पुरुषोत्तम छलाह। अहाँकेँ एहिसँ की प्रेरणा भेटैत अछि ?

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL ★PATNA★